अध्याय 01

भारत में राष्ट्रवाद

इस अध्याय में...

- प्रथम विश्वयुद्ध, खिलाफत और असहयोग आंदोलन
- आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराएँ
- सविनय अवज्ञा की ओर
- सामूहिक अपनत्व की भावना

भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद (Modern Nationalism) की वृद्धि औपनिवेशिक आंदोलन (Anti-colonial Movement) से जुड़ी हुई है। उपनिवेशवाद के साथ अपने संघर्ष की प्रक्रिया में लोगों ने एकता की खोज शुरू कर दी। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने इन समूहों को एकजुट करके एक विशाल आंदोलन शुरू किया।

प्रथम विश्वयुद्ध, खिलाफत और असहयोग आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध (1914) ने संपूर्ण विश्व में एक नई आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का निर्माण किया। इस युद्ध के दौरान भारत को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा; जैसे—
  - रक्षा व्यय (Defence Expenditure) में वृद्धि हुई।
  - सीमा शुल्क (Custom Duty) बढ़ाया गया और आयकर (Income Tax) की शुरुआत की गई।
  - वर्ष 1913-18 के मध्य खाद्यान्न की कीमतें दोगुनी हो चुकी थीं।
  - सेना में गाँव के लोगों को बलपूर्वक (Forcefully) भर्ती किया गया।
- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद वर्ष 1918 से 1921 के दौरान भारतीय उद्योगों की अत्यधिक हानि हुई। देश के अत्यधिक हिस्सों में फसलें खराब व नष्ट हो गईं, खाद्य पदार्थों का भारी अभाव पैदा हो गया, जिसके कारण लोगों को भोजन की कमी होने लगी।
- इसी समय फ्लू की महामारी फैल गई। इस प्रकार की कठिन परिस्थितियों में मोहनदास करमचंद गाँधी जनवरी, 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आए।

सत्याग्रह का विचार

- गाँधीजी का **सत्य** (Truth) और **अहिंसा** (Non-Violence) के आधार पर आंदोलन और विरोध का तरीका **सत्याग्रह** (Satyagraha) के रूप में जाना जाता था। सत्याग्रह के विचार में सत्य के शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर बल दिया जाता था। गाँधीजी का मानना था कि आक्रामक हुए बिना एक सत्याग्रही अहिंसा के माध्यम से युद्ध जीता जा सकता है।
- भारत में आने के बाद गाँधीजी ने कई स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाया।
- वर्ष 1917 में गाँधीजी बिहार के **चंपारण** में गए और किसानों को दमनकारी बागान व्यवस्था (Plantation System) के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- वर्ष 1917 में ही गाँधीजी ने गुजरात के **खेड़ा** जिले में किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया, जो फसल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी (Plague Epidemic) के कारण लगान चुकाने में असमर्थ थे।
- वर्ष 1918 में गाँधीजी सूती कपड़ा कारखानों (Cotton Mills) के श्रमिकों के बीच सत्याग्रही आंदोलन (Satyagraha Movement) को व्यवस्थित करने के लिए **अहमदाबाद** गए।

रॉलेट एक्ट

- वर्ष 1919 में रॉलेट अधिनियम **इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल** (Imperial Legislative Council) के माध्यम से पारित किया गया था, परंतु भारतीय सदस्यों ने इसका विरोध किया।
- इस अधिनियम के अनुसार, राजनीतिक कैदियों (Political Prisoners) को बिना किसी मुकदमे के दो वर्ष के लिए जेल में रखा जा सकता था।
- महात्मा गाँधी ऐसे अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध अहिंसक ढंग से नागरिक अवज्ञा चाहते थे। इसके लिए 6 अप्रैल, 1919 को सत्याग्रह के दिन के रूप में निर्धारित किया गया। इस दिन देश के सभी लोगों ने हड़तालों का आयोजन किया।

- अमृतसर में विभिन्न स्थानीय नेताओं (Local Leaders) को बंदी (Arrest) बनाया गया। साथ ही गाँधीजी के दिल्ली में प्रवेश करने पर पाबंदी लगा दी गई।
- 10 अप्रैल, 1919 को अमृतसर में पुलिस ने एक शांतिपूर्ण जुलूस पर गोलियाँ चलाईं। इस घटना के बाद लोगों ने बैंकों, डाकघरों और रेलवे स्टेशनों पर हमला किया, जिसके फलस्वरूप **मार्शल लॉ**[1] (Martial Law) लगाया गया और जनरल डायर (General Dyer) ने कमान सँभाली।

जलियाँवाला बाग नरसंहार

- 13 अप्रैल, 1919 को पंजाब के अमृतसर में जलियाँवाला बाग के मैदान में अत्यधिक लोग एकत्रित हुए।
- यह मैदान शहर से दूर था, इसलिए वहाँ लागू हो चुके मार्शल लॉ की जानकारी लोगों को नहीं थी। **जनरल डायर** ने उस क्षेत्र में प्रवेश किया और उस मैदान से बाहर निकलने के सभी रास्ते बंद करा दिए। इसके पश्चात् जनरल डायर के सिपाहियों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं। इस घटना में सैकड़ों लोग मारे गए।
- जलियाँवाला बाग हत्याकांड की खबर फैलने के कारण लोग सड़कों पर प्रदर्शन करने लगे, हड़तालें होने लगीं तथा लोगों ने सरकारी भवनों पर हमला किया। लोगों ने अंग्रेजों का डटकर सामना किया।
- रवींद्रनाथ टैगोर ने इस घटना के विरोध में अपनी **नाइटहुड** की उपाधि को वापस लौटा दिया।
- महात्मा गाँधी ने अत्यधिक हिंसा फैलने के कारण इस आंदोलन को बंद कर दिया।

खिलाफत आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध ओटोमन तुर्की (Ottoman Turkey) की हार के साथ समाप्त हो गया तथा यह अफवाह फैल गई कि इस्लामिक विश्व के आध्यात्मिक नेता (खलीफा) ओटोमन सम्राट पर एक कठोर शांति संधि लगाई जाएगी।
- गाँधीजी का यह विचार था कि हिंदुओं और मुस्लिमों को एकसाथ मिलाए बिना किसी भी आंदोलन का आयोजन नहीं किया जा सकता। ऐसा करने का एक तरीका है कि वे खिलाफत का मुद्दा उठाएँ।
- मौलाना आजाद, हकीम अजमल खान और हसरत मोहानी के नेतृत्व में मार्च, 1919 में मुंबई में **एक खिलाफत समिति** की स्थापना हुई थी। मुस्लिम नेता **मोहम्मद अली** और **शौकत अली** ने इस मुद्दे पर एकजुट सामूहिक कार्रवाई की संभावना के बारे में महात्मा गाँधी के साथ चर्चा शुरू की।
- सितंबर, 1920 में कांग्रेस ने अपने **कलकत्ता अधिवेशन** (Calcutta Session) में खिलाफत आंदोलन और स्वराज के समर्थन में एक **असहयोग आंदोलन**[2] शुरू करने के लिए प्रस्ताव पारित किया।

असहयोग आंदोलन की आवश्यकता

गाँधीजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक हिंद स्वराज (1909) में कहा था कि ब्रिटिश शासन भारत में भारतीयों के सहयोग से स्थापित किया गया था। यदि भारतीयों ने सहयोग करने से इनकार कर दिया, तो एक वर्ष में भारत में ब्रिटिश शासन टूट जाएगा और स्वराज की स्थापना हो जाएगी। महात्मा गाँधी ने एक आंदोलन के रूप में असहयोग आंदोलनों के कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ तैयार कीं

- आंदोलन लोगों को खिताब (Titles), सम्मान और मानद पदों (Honarary Posts) के आत्मसमर्पण के साथ शुरू किया जाएगा।
- सिविल सेवा, सेना, पुलिस, ब्रिटिश न्यायालयों और विधानसभाओं, स्कूल और कॉलेजों और ब्रिटिश सामान का **बहिष्कार**[3] (Bycott) करना चाहिए।
- कुटीर उद्योगों (Cottage Industries) को बढ़ावा देने के लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना होगा और उनके स्थान पर घरेलू वस्तुओं या स्वदेशी वस्तुओं को उपयोग में लाना होगा।
- सरकार के दमन के मामले में, सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया जाएगा।

अंतत: दिसंबर, 1920 में **नागपुर सम्मेलन** (Nagpur Conference) के दौरान कांग्रेस द्वारा असहयोग आंदोलन अपनाया गया, जिसका नेतृत्व महात्मा गाँधी ने किया।

आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराएँ

असहयोग-खिलाफत आंदोलन जनवरी, 1921 में शुरू हुआ। विभिन्न सामाजिक समूहों ने अपनी विशिष्ट आकांक्षाओं (Aspirations) के साथ आंदोलन में भाग लिया।

शहर में आंदोलन

- यह आंदोलन शहर में मध्यम वर्ग की भागीदारी के साथ शुरू हुआ था।
- छात्रों और शिक्षकों ने सरकार नियंत्रित स्कूल छोड़ दिया एवं वकीलों ने मुकदमे लड़ना बंद कर दिया।
- मद्रास के अतिरिक्त ज्यादातर प्रांतों में परिषद् चुनावों का बहिष्कार किया गया।
- लोगों ने विदेशी कपड़े एवं माल को अस्वीकार कर दिया। व्यापारियों ने विदेशी सामान का व्यापार करने या विदेशी व्यापार में पैसा लगाने से इनकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों के उत्पादन में वृद्धि हुई।
- शराब की दुकानों की **पिकेटिंग** (Picketing) की गई एवं विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। पिकेटिंग प्रदर्शन या विरोध का एक ऐसा स्वरूप है, जिसमें लोग किसी दुकान, फैक्ट्री या दफ्तर के अंदर जाने का रास्ता रोक लेते हैं।
- यह आंदोलन शहरों में धीरे-धीरे कम होता गया। इसके अनेक कारण थे; जैसे—खादी का कपड़ा महँगा होने के कारण गरीबों के लिए उपयुक्त नहीं था। वे मिलों के कपड़े का ज्यादा दिनों तक विरोध नहीं कर सकते थे।

---

1 **मार्शल लॉ** (Martial Law) कर्फ्यू के दौरान वह स्थिति, जिसमें सेना को कड़े निर्देश मिले कि कर्फ्यू के दौरान यदि कोई भी बाहर दिखे तो उसे गोली मार दे।

2 **असहयोग आंदोलन** (Non-cooperation Movement) इसका शाब्दिक अर्थ है किसी भी प्रकार का सहयोग न करना। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गाँधी जी द्वारा यह आंदोलन चलाया गया था। इसमें सभी सरकारी कार्यों का सहयोग बंद कर दिया गया था।

3 **बहिष्कार** (Boycott) किसी भी विदेशी के साथ संपर्क रखने और जुड़ने से इंकार करना या गतिविधियों में भागीदारी, विदेशी वस्तुओं की खरीद व प्रयोग से इंकार करना।

ग्रामीण क्षेत्रों में विद्रोह

शहरों से असहयोग आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों में फैल गया।

अवध में किसान आंदोलन

- अवध में किसानों का नेतृत्व **संन्यासी बाबा रामचंद्र** कर रहे थे। बाबा रामचंद्र फिजी में **गिरमिटिया मजदूर**[4] (Indentured Labour) के रूप में भी कार्य कर चुके थे।
- किसानों का आंदोलन अत्यधिक राजस्व वसूल करने वाले जमींदारों के विरुद्ध था। इस आंदोलन में लगान कम करने, **बेगार**[5] (Begar) खत्म करने (Abolition of Begar) और दमनकारी जमींदारों का बहिष्कार करने की माँग की गई। अनेक स्थानों पर जमींदारों को नाई-धोबी की सुविधाओं से वंचित करने के लिए पंचायतों ने **नाई-धोबी बंद** का आदेश दिया।
- जून, 1920 में जवाहरलाल नेहरू ने अवध के गाँवों में घूमना शुरू कर दिया। उन्होंने ग्रामीणों से बात की और उनकी समस्याओं को समझने की कोशिश की। अक्टूबर, 1920 तक **अवध किसान सभा** (Awadh Kisan Sabha) की स्थापना की गई। इसका नेतृत्व जवाहरलाल नेहरू, बाबा रामचंद्र और कुछ अन्य लोगों ने किया था। एक महीने के अंदर इस क्षेत्र के आस-पास के गाँवों में 300 से अधिक शाखाएँ स्थापित की गई थीं।

आंध्र प्रदेश में आदिवासी आंदोलन

- आदिवासी किसानों ने महात्मा गाँधी के संदेश और स्वराज के विचार का अलग अर्थ निकाला।
- 1920 के दशक के प्रारंभ में आंध्र प्रदेश की **गुडेम पहाड़ियों** में एक उग्र **गुरिल्ला आंदोलन**, **अल्लूरी सीताराम राजू** के नेतृत्व में पूर्ण रूप से फैल गया था।
- असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर राजू ने महात्मा गाँधी की महानता की बात की तथा लोगों को 'खादी' पहनने और शराब का त्याग करने को कहा।
- गुडेम के विद्रोहियों ने पुलिस स्टेशनों पर हमला किया, ब्रिटिश अधिकारियों को मारने का प्रयास किया और स्वराज को प्राप्त करने के लिए गुरिल्ला युद्ध जारी रखा।
- अल्लूरी सीताराम राजू को पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया और वर्ष 1924 में फाँसी दे दी गई।

बागानों में स्वराज

- **अंतर्देशीय उत्प्रवासन अधिनियम** (Inland Emigration Act), 1859 के अनुसार, बागानी मजदूरों को बिना इजाजत बागान से बाहर जाने का अधिकार नहीं था। उन्होंने जब असहयोग आंदोलन के बारे में सुना, तो उन्होंने बागान छोड़ दिया और वे अपने घर वापस चले गए।
- बागानी मजदूरों का विश्वास था कि गाँधी राज में प्रत्येक व्यक्ति को गाँव में ही जमीन मिल जाएगी। इन्हें ब्रिटिश पुलिस ने पकड़कर इनकी अत्यधिक पिटाई की।

सविनय अवज्ञा की ओर

- महात्मा गाँधी ने फरवरी, 1922 में असहयोग आंदोलन को वापस लेने का फैसला किया। गाँधीजी ने अनुभव किया कि सामूहिक संघर्षों के लिए तैयार होने से पहले उन्हें सत्याग्रहियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
- असहयोग आंदोलन को वापस लेने का मुख्य कारण **चौरी-चौरा** की घटना थी। चौरी-चौरा की घटना 4 फरवरी, 1922 को संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में हुई।

कांग्रेस के अंतर्गत अलग-अलग विचार

- कांग्रेस के कुछ नेता बड़े पैमाने पर संघर्ष से थक चुके थे और वे वर्ष 1919 के **भारत सरकार अधिनियम** (Government of India Act) द्वारा स्थापित प्रांतीय परिषदों के चुनाव में भाग लेना चाहते थे। उन्होंने अनुभव किया कि परिषदों के अंदर ब्रिटिश नीतियों का विरोध करना महत्त्वपूर्ण है।
- **सी. आर. दास** और **मोतीलाल नेहरू** ने राजनीति (परिवाद के अंतर्गत) में वापसी करने के लिए कांग्रेस के अंदर **स्वराज पार्टी** का गठन किया, लेकिन **जवाहरलाल नेहरू** और **सुभाषचंद्र बोस** जैसे युवा नेताओं ने अधिक सशक्त जन-आंदोलन और पूर्ण स्वतंत्रता के लिए तर्क दिया। आंतरिक बहस और असहमति की स्थिति में दो कारक ऐसे थे, जिन्होंने वर्ष 1920 के अंत में भारतीय राजनीति का आकार बदल दिया। वे हैं
  - **प्रथम** विश्वव्यापी आर्थिक मंदी का प्रभाव।
  - **दूसरा** कृषि मूल्य, जो वर्ष 1926 से गिरने लगा और वर्ष 1930 के बाद पूर्ण रूप से धराशायी हो गया।

साइमन कमीशन का गठन

- **साइमन कमीशन** (Simon Commission) का गठन **जॉन साइमन** के नेतृत्व में किया गया था। साइमन कमीशन का मुख्य उद्देश्य भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली की समीक्षा करना और उसके विषय में सुझाव देना था।
- भारतीय नेताओं ने इस आयोग का विरोध किया, क्योंकि इसमें कोई भारतीय नहीं था।
- वर्ष 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया, तो उसका स्वागत **साइमन कमीशन वापस जाओ** (Simon Commission Go Back) नारे के साथ किया गया।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित सभी दलों ने प्रदर्शनों में भाग लिया।

पूर्ण स्वराज की माँग

- अक्टूबर, 1929 में वायसराय लॉर्ड इरविन ने भारत के लिए एक **आधिकारिक स्थिति** (Dominion Status) का अनिश्चित प्रस्ताव और भविष्य के संविधान पर चर्चा करने के लिए एक **गोलमेज सम्मेलन** (Round Table Conference) की घोषणा की।

---

4 **गिरमिटिया मजदूर** (Indentured Labour) औपनिवेशिक शासन के दौरान अनेक लोगों को काम करने के लिए विभिन्न स्थानों पर ले जाया गया था, जिन्हें बाद में गिरमिटिया कहा जाने लगा।

5 **बेगार** (Begar) बिना किसी पारिश्रमिक के काम करवाना।

- दिसंबर, 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की माँग या भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की माँग को औपचारिक रूप से स्वीकार कर लिया गया।
- यह घोषित किया गया कि **26 जनवरी, 1930 को स्वतंत्रता दिवस** के रूप में मनाया जाएगा

दांडी यात्रा और सविनय अवज्ञा आंदोलन

- देश को एकजुट करने के लिए महात्मा गाँधी ने नमक को एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में देखा। उन्होंने 31 जनवरी, 1930 को वायसराय इरविन को एक पत्र लिखा, जिसमें ग्यारह माँगों का आग्रह किया गया था। इन माँगों में **नमक कर** (Salt Tax) को खत्म करने की माँग भी शामिल थी।
- नमक पर कर और इसके उत्पादन पर सरकार के एकाधिकार को गाँधीजी ने ब्रिटिश शासन का सबसे क्रूर पक्ष बताया। इरविन माँग पर बात करने के लिए तैयार नहीं थे, जिसके कारण गाँधीजी ने आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

गाँधीजी ने 12 मार्च, 1930 को 78 अनुयायियों के साथ गुजरात के तटीय शहर दांडी के लिए साबरमती आश्रम से अपनी यात्रा शुरू की। 6 अप्रैल को वह दांडी पहुँचे और उन्होंने नमक कानून का औपचारिक रूप से उल्लंघन किया। उन्होंने समुद्री पानी को उबालकर नमक बनाना शुरू किया। इस यात्रा के दौरान 240 किमी की दूरी तय की गई थी। इस प्रकार सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की गई। इस आंदोलन के अंतर्गत

- विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया गया।
- शराब की दुकानों का विरोध किया गया था।
- किसानों ने राजस्व और चौकीदारी कर देने से इंकार कर दिया।
- गाँव के अधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया।
- कई जगहों पर वनीय लोगों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया।

इस आंदोलन से परेशान होकर औपनिवेशिक सरकार ने कांग्रेसी नेताओं को एक-एक करके गिरफ्तार (Arrest) करना शुरू किया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करना

- सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर हमला किया गया, महिलाओं और बच्चों को पीटा गया और करीब 1,00,000 लोगों को गिरफ्तार किया गया। जब एक प्रमुख नेता अब्दुल गफ्फार खान को अप्रैल, 1930 में गिरफ्तार किया गया, तो शहर में कई हिंसक घटनाओं की सूचना मिली।
- इस स्थिति में महात्मा गाँधी ने एक बार फिर आंदोलन को बंद करने का फैसला किया और 5 मार्च, 1931 को इरविन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते को **गाँधी-इरविन समझौता** (Gandhi-Irwin Pact) कहा गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन की पुनः स्थापना

दिसंबर, 1931 में गाँधीजी गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन गए, लेकिन इस सम्मेलन का कोई लाभ नहीं हुआ और वे भारत वापस आ गए। कांग्रेस को अवैध घोषित किया गया तथा अब्दुल गफ्फार खान और जवाहरलाल नेहरू दोनों जेल में थे, इसलिए महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुन: शुरू किया। यह आंदोलन एक वर्ष के लिए जारी रखा गया, लेकिन वर्ष 1934 तक इस आंदोलन का प्रभाव कम हो गया था।

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का गठन

अनेक राष्ट्रवादियों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अहिंसक विधि पर विश्वास नहीं किया। वर्ष 1928 में भगतसिंह, जतिन दास और अजय घोष जैसे कुछ राष्ट्रीय नेताओं ने दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में एक बैठक में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (Hindustan Socialist Republican Army, HSRA) की स्थापना की।

विभिन्न समूहों के लिए आंदोलन का अर्थ

विभिन्न सामाजिक समूहों ने विभिन्न आदर्शों या कारणों के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया। विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए स्वराज का अर्थ अलग था। ये थे

- ग्रामीण इलाकों में गुजरात के पाटीदार (Patidars) और उत्तर प्रदेश के जाट (Jats) जैसे समृद्ध किसान समुदाय सविनय अवज्ञा आंदोलन के उत्साही समर्थक थे। उन्होंने अपने समुदायों को एकत्रित किया और अनिच्छुक सदस्यों का बहिष्कार किया।
- इनके लिए स्वराज की लड़ाई भारी लगान के विरुद्ध थी, परंतु जब वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन को लगानों को कम किए बिना वापस ले लिया गया, तो इन्हें बड़ी निराशा हुई, जिसके परिणामस्वरूप जब वर्ष 1932 में आंदोलन दोबारा शुरू हुआ, तो उनमें से बहुत से किसानों ने इसमें हिस्सा नहीं लिया था।
- गरीब किसानों को जमीन के मालिकों को किराए का भुगतान करना कठिन हो गया। वे कई तरह के कट्टरपंथी आंदोलनों (Radical Movements) में शामिल हो गए, जो समाजवादी और कम्युनिस्टों के नेतृत्व में चल रहे थे। उन्हें आशा थी कि उन्हें किराए का कोई और भुगतान नहीं करना पड़ेगा।
- व्यावसायिक हितों को एकजुट करने के लिए वर्ष 1920 में भारतीय औद्योगिक एवं व्यावसायिक कांग्रेस और वर्ष 1927 में भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ का निर्माण किया गया।
- **जी. डी. बिरला** और **पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास** जैसे प्रसिद्ध उद्योगपतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर औपनिवेशिक नियंत्रण के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन का भी समर्थन किया।
- औद्योगिक श्रमिक वर्ग ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में नागपुर क्षेत्र को छोड़कर कहीं दूसरी जगह बड़ी संख्या में भाग नहीं लिया।
- इस आंदोलन की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता महिलाओं की बड़े पैमाने पर भागीदारी थी। शहरी क्षेत्रों में इस आंदोलन में अधिकतर उच्च जातियों की महिलाएँ शामिल थीं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में संपन्न किसान परिवारों की महिलाएँ शामिल थीं। गाँधीजी से प्रेरित होकर महिलाएँ राष्ट्र की सेवा करना अपना पवित्र दायित्व समझने लगीं।

सविनय अवज्ञा की सीमाएँ

- स्वराज की अवधारणा ने सभी सामाजिक समूहों को प्रभावित नहीं किया था। ऐसा एक समूह 'अस्पृश्यों' (Untouchables) का था, जो स्वयं को 1930 के दशक के दौरान दलित कहने लगा था।
- लंबे समय से कांग्रेस ने दलितों को सनातनपंथियों, रूढ़िवादी और सवर्ण हिंदुओं के भय से नजरअंदाज किया था।

- गाँधीजी ने दलितों को हरिजन या भगवान के बच्चे बताया। गाँधीजी का मानना था कि अस्पृश्यता को खत्म किए बिना स्वराज की सौ साल तक स्थापना नहीं की जा सकती।
- उन्होंने दलितों को मंदिरों में प्रवेश और उनकी सार्वजनिक कुएँ, तालाब, सड़कों और स्कूलों तक पहुँच बनाने के लिए सत्याग्रह किया।
- गाँधीजी ने सफाई के काम को सम्मानित करने के लिए स्वयं शौचालयों को साफ किया। गाँधीजी ने अछूतों के बारे में अपनी मानसिकता बदलने के लिए ऊपरी वर्ग से आग्रह किया।

दलित नेताओं के निर्णय

- दलित नेता अपने समुदाय की समस्याओं का एक अलग राजनीतिक समाधान चाहते थे। डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने शैक्षिक संस्थानों में आरक्षित सीटों और अलग निर्वाचन क्षेत्रों की माँग की, जिससे विधायी परिषदों के लिए दलित सदस्यों का चयन किया जा सके।
- अंबेडकर ने दलितों को वर्ष 1930 में **दमित वर्ग संघ** (Depressed Classes Association) में संगठित किया। दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों की माँग के कारण दूसरे गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गाँधी और डॉ. अंबेडकर के मध्य मतभेद थे।
- अंबेडकर जी ने अंतत: गाँधीजी के विचार को स्वीकार कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप सितंबर, 1932 को **पूना समझौते** (Poona Pact) पर हस्ताक्षर किए गए। इससे दमित वर्गों को प्रांतीय और केंद्रीय विधानपरिषद् में आरक्षित सीटें मिल गईं, लेकिन उनके लिए मतदान सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों में ही होता था।

हिंदू-मुस्लिम संघर्ष

- भारत के कुछ मुस्लिम राजनीतिक संगठनों ने भी सविनय अवज्ञा आंदोलन में कोई रुचि नहीं दिखाई।
- असहयोग और खिलाफत आंदोलन शांत होने के बाद, मुस्लिमों का एक बड़ा हिस्सा कांग्रेस से अलग हो गया। 1920 के दशक के मध्य से कांग्रेस, हिंदू महासभा जैसे हिंदू धार्मिक राष्ट्रवादी संगठनों के काफी नजदीक थी। हिंदू-मुस्लिमों के बीच संबंध खराब हो गए और दोनों समुदाय उग्र धार्मिक जुलूस निकालने लगे।
- वर्ष 1930 में सर मुहम्मद इकबाल ने मुसलमानों के लिए अल्पसंख्यक राजनीतिक हितों की रक्षा के उद्देश्य से **पृथक् निर्वाचिका** (Separate Electorates) की माँग की। उन्होंने अपनी इस माँग को भारत के अंदर एक मुस्लिम भारत का निर्माण कहकर उचित बताया।

हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग के बीच मतभेद

- कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने एकता के लिए फिर से बात करने के प्रयास किए। वर्ष 1927 में यह महसूस हुआ कि एकता स्थापित की जा सकती है।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच मतभेद सिर्फ भावी विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व करने का था।
- मुस्लिम लीग के नेता **मुहम्मद अली जिन्ना** दो शर्तों पर मुस्लिमों के लिए अलग निर्वाचिका की माँग को छोड़ने के लिए तैयार थे
  - केंद्रीय सभा में मुस्लिमों को आरक्षित सीटें दी जाएँ।
  - प्रतिनिधित्व, मुस्लिम वर्चस्व वाले प्रांतों (बंगाल और पंजाब) में आबादी के अनुपात में हो।
- वर्ष 1928 में एम. आर. जयकर की अगुवाई में हिंदू महासभा के अत्यधिक विरोध के कारण यह मुद्दा हल नहीं हो पाया।
- अत्यधिक मुस्लिम नेता और बुद्धिजीवी को डर था कि हिंदू-बहुसंख्या के वर्चस्व की स्थिति में अल्पसंख्यकों की संस्कृति और पहचान खो जाएगी।

सामूहिक अपनत्व की भावना

राष्ट्रवादी भावना तब फैलती है, जब विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोग सामूहिक अपनत्व की भावना विकसित करना शुरू कर देते हैं। यह भावना एकजुट संघर्षों के अनुभव के माध्यम से विकसित हुई। इतिहास, कथा, लोकगीत, गीत, लोकप्रिय चित्र और प्रतीक, सभी ने राष्ट्रवाद के निर्माण में भूमिका निभाई। यह निम्नलिखित तरीकों से स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारत में देखी गई थी

- किसी राष्ट्र की पहचान को अकसर चित्र या छवि में दर्शाया जाता है। **भारत माता** (Bharat Mata) की छवि 1870 के दशक में पहली बार **बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय** ने बनाई थी। उन्होंने मातृभूमि के लिए **वंदे मातरम्** गीत लिखा था। बाद में यह गीत उन्होंने अपने उपन्यास **आनंदमठ** में शामिल किया था और यह गीत व्यापक रूप से बंगाल में स्वदेशी आंदोलन में गाया गया था।
- भारत माता की छवि (Image of Bharat Mata) को पहली बार अबनींद्रनाथ टैगोर ने चित्रित किया था। भारतीय लोकगीत और लोक कथाओं ने राष्ट्रवाद के विचार को बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- बंगाल में **रवींद्रनाथ टैगोर** और मद्रास में **नटेसा शास्त्री** ने लोक कथाओं और गीतों का विशाल संग्रह एकत्र किया। उन्होंने लोक पुनरुद्धार के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान बंगाल में तिरंगा (लाल, हरा और पीला) ध्वज तैयार किया गया था। इसमें आठ प्रांतों का प्रतिनिधित्व किया गया था और एक अर्द्ध-चंद्र को हिंदू और मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाया गया था।
- वर्ष 1921 तक गाँधीजी ने स्वराज ध्वज को तैयार कर लिया था। यह भी एक तिरंगा (सफेद, हरा और लाल) था, जिसके केंद्र में एक चरखा था, जो गाँधीजी के आदर्श का प्रतिनिधित्व करता था।

भारतीय प्राचीन इतिहास के माध्यम से राष्ट्रवाद

- राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न करने का एक अन्य साधन इतिहास की पुन: व्याख्या करना था। राष्ट्रवादी लेखकों ने पाठकों से आग्रह किया कि वे भारत की महान उपलब्धियों पर गर्व करें और ब्रिटिश शासन के अंतर्गत जीवन की दयनीय स्थिति को बदलने के लिए संघर्ष करें।
- लोगों के एकीकरण की कुछ समस्याएँ थीं। जिस अतीत की महिमा की जा रही थी, वह हिंदुओं का था तथा जो छवियाँ बनाई गई थीं, वे हिंदू प्रतीक थीं, इसलिए अन्य समुदायों के लोग स्वयं को अलग समझने लगे थे।

निष्कर्ष

अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध बढ़ता गुस्सा विभिन्न भारतीय समूहों और वर्गों को स्वतंत्रता के साझा संघर्ष की ओर अग्रसर कर रहा था। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने लोगों के असंतोष और परेशानियों को स्वतंत्रता के संगठित आंदोलन में समाहित करने का प्रयास किया।

चैप्टर प्रैक्टिस

भाग 1
वस्तुनिष्ठ प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. गाँधीजी ने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों के समर्थन में किस वर्ष सत्याग्रह को अपनाया था?

(a) वर्ष 1915 में (b) वर्ष 1916 में
(c) वर्ष 1917 में (d) वर्ष 1918 में

उत्तर (c) गाँधीजी ने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों के समर्थन में वर्ष 1917 में सत्याग्रह को अपनाया था। इस आंदोलन का प्रमुख कारण प्लेग महामारी के बावजूद भी किसानों पर लगान लगाना था। इस आंदोलन के पश्चात् लगान की दरों में कटौती की गई थी।

2. कांग्रेस के किस अधिवेशन में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन को शुरू करने का प्रस्ताव पारित किया गया था?

(a) लखनऊ अधिवेशन, 1918 (b) लाहौर अधिवेशन, 1919
(c) कलकत्ता अधिवेशन, 1920 (d) बेलगाँव अधिवेशन, 1918

उत्तर (c) कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन, 1920 में महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं ने असहयोग आंदोलन को शुरू करने का प्रस्ताव पारित किया। असहयोग आंदोलन खिलाफत आंदोलन तथा स्वराज को समर्पित करने के लिए शुरू किया गया था।

3. स्वतंत्रता आंदोलन के समय किस क्रांतिकारी के द्वारा 'हिंद स्वराज' नामक पुस्तक की रचना की गई थी?

(a) शौकत अली (b) रवींद्रनाथ टैगोर
(c) मोहम्मद अली (d) गाँधीजी

उत्तर (d) स्वतंत्रता आंदोलन के समय गाँधीजी ने 'हिंद स्वराज' नामक पुस्तक की रचना की थी। इस पुस्तक में गाँधीजी ने कहा था कि ब्रिटिश शासन भारत में भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ था, यदि हम असहयोग कर दें, तो एक वर्ष में भारत में ब्रिटिश शासन टूट जाएगा।

4. अवध के किस किसान के द्वारा अवध के किसानों को नेतृत्व प्रदान किया गया, जो पहले फिजी में इंडेट मजदूर थे?

(a) बाबा रामदेव (b) बाबा नागार्जुन देव
(c) बाबा रामचंद्र (d) बाबा परमानंद

उत्तर (c) अवध के किसानों को संन्यासी बाबा रामचंद्र ने नेतृत्व प्रदान किया, जो पहले फिजी में गिरमिटिया मजदूर के रूप में भी कार्य कर चुके थे। अवध के किसानों का आंदोलन अत्यधिक राजस्व वसूल करने वाले जमींदारों के विरुद्ध था।

5. दिए गए युग्मों का अध्ययन कर गलत युग्म का चयन करें

(a) असहयोग आंदोलन – वर्ष 1921
(b) खिलाफत आंदोलन – वर्ष 1919
(c) चौरी-चौरा आंदोलन – वर्ष 1922
(d) गाँधीजी का अहमदाबाद में आगमन – वर्ष 1917

उत्तर (d) गाँधीजी का अहमदाबाद में आगमन वर्ष 1918 में हुआ था। वह अहमदाबाद सूती कपड़ा कारखानों के श्रमिकों के बीच सत्याग्रही आंदोलन को व्यवस्थित करने के लिए गए थे।

6. ………… के पश्चात् गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया, क्योंकि वह आंदोलन के हिंसक स्वरूप का समर्थन नहीं करते थे।

(a) साइमन कमीशन का गठन (b) रॉलेट एक्ट
(c) चौरी-चौरा घटना (d) ब्लैक हॉल त्रासदी

उत्तर (c) चौरी-चौरा घटना के पश्चात् गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया था, क्योंकि वह आंदोलन के हिंसक स्वरूप का समर्थन नहीं करते थे। इस आंदोलन के पश्चात् गाँधीजी ने यह महसूस किया कि सामूहिक संघर्षों के लिए तैयार होने से पहले उन्हें सत्याग्रहियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

7. नीचे दिए गए विकल्पों की सहायता से स्वराज पार्टी के गठन के प्रमुख कारण का चुनाव करें

(a) कांग्रेस के सदस्यों का परिषद् की राजनीति में लौटना
(b) कांग्रेस के सदस्यों को भारतीय स्वराज का पता लगाना
(c) कांग्रेस के सदस्यों द्वारा साइमन कमीशन का विरोध करना
(d) भारत के लिए उपराज्य (डोमीनियन स्टेट) का प्रबंध

उत्तर (a) स्वराज पार्टी के गठन का प्रमुख उद्देश्य कांग्रेस के सदस्यों का परिषद् की राजनीति में लौटना था। स्वराज पार्टी का गठन सी आर दास तथा मोतीलाल नेहरू द्वारा कांग्रेस के अंदर किया गया था।

8. दिए गए युग्मों का अध्ययन कर सही युग्म का चयन करें

(a) उत्तर प्रदेश में किसानों का संगठन – वर्ष 1920-21
(b) कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वराज की माँग – वर्ष 1929
(c) अंबेडर द्वारा दमित वर्ग एसोसिएशन की स्थापना – वर्ष 1932
(d) सविनय अवज्ञा की वापसी – वर्ष 1935

उत्तर (b) कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वराज की माँग वर्ष 1929 में की गई थी। उत्तर प्रदेश में वर्ष 1918-19 में बाबा रामचंद्र ने किसानों को संगठित किया था। वर्ष 1930 में अंबेडकर द्वारा दमित वर्ग एसोसिएशन की स्थापना की गई। वर्ष 1931 में गाँधीजी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लिया गया।

9. निम्न कथन की सहायता से संबंधित व्यक्ति की पहचान करें

- उन्होंने नमक को शक्तिशाली प्रतीक के रूप में देखा।
- उन्होंने 31 जनवरी, 1930 को इरविन को पत्र लिखा।
- नमक कर को समाप्त करने की माँग की।

(a) गाँधीजी (b) जवाहरलाल नेहरू
(c) मोतीलाल नेहरू (d) बी. आर. अंबेडकर

उत्तर (a) गाँधीजी

10. दिए गए कथनों का अध्ययन कर, गलत कथन की पहचान करें

(a) जॉन साइमन के नेतृत्व में साइमन कमीशन का गठन किया गया
(b) महात्मा गाँधी ने किसान सभा का गठन किया था
(c) अवध में किसान आंदोलन का नेतृत्व बाबा रामचंद्र ने किया था
(d) वर्ष 1921 में महात्मा गाँधी ने स्वराज ध्वज तैयार कर लिया गया था

उत्तर (b) किसान सभा का गठन सहजानंद स्वामी द्वारा किया गया था। इस आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य तालुकदारों और जमींदारों को खत्म करना था।

11. मुसलमानों के अल्पसंख्यक राजनीतिक हितों की रक्षा के लिए .... ने पृथक् निर्वाचन की माँग की थी।

(a) मुहम्मद इकबाल
(b) मुहम्मद अली जिन्ना
(c) शौकत अली
(d) बी. आर. अंबेडकर

उत्तर (a) मुसलमानों के अल्पसंख्यक राजनीतिक हितों की रक्षा के लिए मुहम्मद इकबाल ने पृथक् निर्वाचन की माँग की थी। उन्होंने अपनी इस माँग को भारत के अंदर एक मुस्लिम भारत का निर्माण कहकर उचित बताया।

12. पश्चिम बंगाल के किस क्रांतिकारी ने बंगाल के लोकगीतों को पुनर्जीवित कर स्वतंत्रता आंदोलन को और अधिक मजबूत किया था?

(a) रवींद्रनाथ टैगोर
(b) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय
(c) अरविंदो घोष
(d) अबनींद्रनाथ टैगोर

उत्तर (a) पश्चिम बंगाल में रवींद्रनाथ टैगोर ने लोकगीतों को पुनर्जीवित कर स्वतंत्रता आंदोलन को और अधिक मजबूत किया था। रवींद्रनाथ टैगोर के गीतों ने स्वदेशी आंदोलन में एक उत्प्रेरक का कार्य किया था।

13. सुमेलित करें

सूची I (वर्ष)	सूची II (घटना)
A. 1919	1. जलियाँवाला बाग हत्याकांड
B. 1924	2. अल्लूरी सीताराम राजू को फाँसी दी गई
C. 1931	3. दूसरा गोलमेज सम्मेलन
D. 1930	4. नमक आंदोलन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिए

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	1	4	2	3	(b)	1	2	3	4
(c)	4	3	2	1	(d)	4	3	1	2

उत्तर (b) 1 2 3 4

14. निम्न में से कौन-से कथन सविनय अवज्ञा आंदोलन से संबंधित हैं?

1. इस आंदोलन के अंतर्गत विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया गया।
2. इस आंदोलन में गाँव के अधिकारियों ने इस्तीफा नहीं दिया।
3. इस आंदोलन के अंतर्गत वन कानूनों का उल्लंघन किया गया।

कूट

(a) 1 और 2
(b) 2 और 3
(c) 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर (c) सविनय अवज्ञा आंदोलन के अंतर्गत विदेशी कपड़ों का बहिष्कार तथा वन कानूनों का उल्लंघन किया गया। इस आंदोलन के अंतर्गत गाँवों के अधिकारियों ने भी इस्तीफा दे दिया था।

15. दी गई छवि में महात्मा गाँधी के साथ उनके 78 सहयोगी भी जा रहे हैं। इस यात्रा के दौरान हजारों लोग गाँधीजी के साथ जुड़ते गए। यह चित्र ब्रिटिश शासन के खिलाफ किस आंदोलन को दर्शाता है?

(a) विदेशी कपड़ों का बहिष्कार (b) दांडी यात्रा
(c) खिलाफत आंदोलन (d) किसान यात्रा

उत्तर (b) दांडी यात्रा

कथन-कारण प्रश्न

निर्देश (प्र.सं. 16-20) नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक कथन (A) और दूसरा कारण (R) है। दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें

कूट

(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A सही और R गलत है
(d) A गलत और R सही है

16. कथन (A) गाँधीजी का विरोध का तरीका सत्याग्रह के रूप में जाना जाता है।

कारण (R) क्योंकि गाँधीजी का मानना था कि आक्रामक हुए बिना एक सत्याग्रही अहिंसा के माध्यम से युद्ध जीत सकता है।

उत्तर (a) गाँधीजी का विरोध का तरीका सत्याग्रह के रूप में जाना जाता है, क्योंकि गाँधीजी की मान्यता के अनुसार आक्रामक हुए बिना एक सत्याग्रही अहिंसा के माध्यम से युद्ध जीत सकता है। सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर बल दिया जाता है। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

17. कथन (A) जलियाँवाला बाग नरसंहार के पश्चात् रवींद्रनाथ टैगोर ने नाइटहुड की उपाधि लौटा दी थी।

कारण (R) इस नरसंहार के अंतर्गत जनरल डायर के सिपाहियों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दी थीं।

उत्तर (a) जलियाँवाला बाग नरसंहार के पश्चात् रवींद्रनाथ टैगोर ने नाइटहुड की उपाधि लौटा दी थी, क्योंकि इस नरसंहार में जनरल डायर ने जलियाँवाला बाग के रास्तों को बंद कर भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दी थीं। इस घटना के पश्चात् सैकड़ों लोग मारे गए थे। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

18. कथन (A) भारत में साइमन कमीशन का स्वागत 'साइमन कमीशन वापस जाओ' नारे के साथ किया गया।

कारण (R) इसका प्रमुख कारण कमीशन में एक भी भारतीय का न होना था।

उत्तर (a) भारत में साइमन कमीशन का स्वागत 'साइमन कमीशन वापस जाओ' के नारे के साथ किया गया। इस आयोग का विरोध इसलिए किया गया, क्योंकि इसमें कोई भी भारतीय नहीं था। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

19. कथन (A) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के पश्चात् गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनः जीवित किया।

कारण (R) गाँधीजी को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से जो उम्मीद थी, वह पूर्ण नहीं हो सकी।

उत्तर (b) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के पश्चात् गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनः जीवित किया, क्योंकि गाँधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से निराश होकर लौटे थे। इस समय कांग्रेस को भी अवैध घोषित कर दिया गया था। अतः A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

20. कथन (A) भारतीय लोकगीत और लोककथाओं ने राष्ट्रवाद के विचार को बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कारण (R) लोकगीत और लोककथाएँ लोगों में सामूहिक अपनत्व की भावना विकसित करना शुरू कर देते हैं।

उत्तर (a) भारतीय लोकगीतों और लोककथाओं ने राष्ट्रवाद के विचार को बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि लोकगीतों व लोककथाओं ने अतीत के गौरव का भाव उत्पन्न किया था, जिससे लोगों में अपनत्व की भावना का विकास हुआ तथा राष्ट्रीय आंदोलन को ऊर्जा प्राप्त हुई। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

केस स्टडी आधारित प्रश्न

निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

गाँधीजी ने वर्ष 1919 में प्रस्तावित रॉलेट एक्ट (1919) के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आंदोलन चलाने का फ़ैसला लिया। भारतीय सदस्यों के भारी विरोध के बावजूद इस क़ानून को इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने बहुत जल्दबाजी में पारित कर दिया था।

फरवरी, 1922 में महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन वापस लेने का फैसला कर लिया। उनको लगता था कि आंदोलन हिंसक होता जा रहा है और सत्याग्रहियों को व्यापक प्रशिक्षण की जरूरत है। कांग्रेस के कुछ नेता इस तरह के जनसंघर्षों से थक चुके थे। वे वर्ष 1919 के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट के तहत गठित की गई प्रांतीय परिषदों के चुनाव में हिस्सा लेना चाहते थे। उनको लगता था कि परिषदों में रहते हुए ब्रिटिश नीतियों का विरोध करना, सुधारों की वकालत करना और यह दिखाना भी महत्त्वपूर्ण है कि ये परिषदें लोकतांत्रिक संस्थाएँ नहीं हैं। सी आर दास और मोतीलाल नेहरू ने परिषद् राजनीति में वापस लौटने के लिए कांग्रेस के भीतर ही स्वराज पार्टी का गठन कर डाला।

जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे युवा नेता ज्यादा उग्र जनांदोलन और पूर्ण स्वतंत्रता के लिए दबाव बनाए हुए थे। आंतरिक बहस व असहमति के इस माहौल में दो ऐसे तत्त्व थे, जिन्होंने बीस के दशक के आखिरी सालों में भारतीय राजनीति की रूपरेखा एक बार फिर बदल दी।

पहला कारक था—विश्वव्यापी आर्थिक मंदी का असर। वर्ष 1926 से कृषि उत्पादों की कीमतें गिरने लगी थीं और वर्ष 1930 के बाद तो पूरी तरह धराशायी हो गईं। कृषि उत्पादों की माँग गिरी और निर्यात कम होने लगा तो किसानों को अपनी उपज बेचना और लगान चुकाना भी भारी पड़ने लगा। वर्ष 1930 तक ग्रामीण इलाके भारी उथल-पुथल से गुज़रने लगे थे।

(i) फरवरी, 1922 में गाँधीजी ने किन कारणों से असहयोग आंदोलन बीच में ही समाप्त करने की घोषणा की?

(a) ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी की सभी शर्तें स्वीकार कर लीं
(b) आंदोलन का स्वरूप हिंसात्मक हो गया था
(c) आंदोलन के प्रति लोगों में निराशा की भावना उत्पन्न हो गई थी
(d) ब्रिटिश अधिकारी स्वयं इस आंदोलन से पीछे हट गए

उत्तर (b) फरवरी, 1922 में गोरखपुर में चौरी-चौरा कांड के पश्चात् महात्मा गाँधी ने असहयोग को वापस लेने का निर्णय लिया। यह निर्णय लेने का प्रमुख कारण आंदोलन का हिंसात्मक होना था।

(ii) वर्ष 1928 में साइमन कमीशन के भारत आगमन के दौरान इसका व्यापक विरोध किया गया। इसके पीछे मुख्य कारण क्या था?

(a) साइमन कमीशन भारत का विभाजन चाहता था
(b) साइमन कमीशन सांप्रदायिक नीतियों का पक्षधर था
(c) इस कमीशन में एक भी सदस्य भारतीय नहीं था
(d) साइमन कमीशन भारतीय स्वतंत्रता का विरोधी था

उत्तर (c) इस कमीशन में एक भी सदस्य भारतीय नहीं था

(iii) साइमन कमीशन के विरोध को शांत करने के उद्देश्य से तत्कालीन वायसराय ने किस प्रस्थिति की घोषणा की?

(a) पूर्ण स्वराज की
(b) पूर्ण स्वतंत्रता की
(c) डोमीनियन स्टेट्स की
(d) राष्ट्रमंडल समिति की

उत्तर (c) साइमन कमीशन के विरोध को शांत करने के उद्देश्य से तत्कालीन वायसराय ने डोमीनियन स्टेट्स की घोषणा की, जिसके लिए उन्होंने भविष्य में गोलमेज सम्मेलन के आयोजन की घोषणा की थी।

(iv) 1930 के दशक में भारतीय ग्रामीण क्षेत्र में उथल-पुथल मच गई, इसके पीछे मुख्य कारण था ....।

(a) वैश्विक आर्थिक नीति
(b) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(c) लॉर्ड इरविन की नीतियाँ
(d) ये सभी

उत्तर (a) वैश्विक आर्थिक नीति

(v) साइमन कमीशन के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश पुलिस के हमले में किस क्रांतिकारी की मृत्यु हो गई?

(a) बाल गंगाधर तिलक
(b) लाला लाजपत राय
(c) विष्णु चापेकर
(d) सरोजनी नायडू

उत्तर (b) साइमन कमीशन के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश पुलिस के हमले में लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई थी। लाला लाजपत राय की मृत्यु ने राष्ट्रीय आंदोलन को उग्र कर दिया था।

(vi) दिए गए कथन का अध्ययन कर सही कूट का चुनाव करें

1. सी आर दास और मोतीलाल नेहरू ने परिषद् राजनीति में वापस लौटने के लिए कांग्रेस के भीतर स्वराज पार्टी का गठन किया।
2. वर्ष 1926 से कृषि उत्पादों की कीमतें गिरने लगी थीं।
3. वर्ष 1930 के पश्चात् किसानों को अपनी उपज बेचना और लगान चुकाना भारी पड़ने लगा।

कूट

(a) 1 और 2
(b) 1 और 3
(c) 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर (d) 1, 2 और 3

भाग 2

वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उपनिवेशों में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन से जुड़ी हुई क्यों थी? **(NCERT)**

उत्तर राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया उपनिवेशवाद के विरोध में होने वाले आंदोलनों से बहुत गहरे रूप से जुड़ी थी, क्योंकि

- औपनिवेशक उत्पीड़न और दमन के साझा भाव ने अन्य सभी समूहों को एक-दूसरे से बाँध दिया था।
- औपनिवेशिक शासकों के विरुद्ध हो रहे संघर्ष के दौरान लोग आपसी एकता को पहचानने लगे थे।

इस प्रकार, राष्ट्रवाद का उदय उपनिवेशवाद के विरोध में हुए आंदोलनों का परिणाम था, क्योंकि इस विरोध के कारण ही औपनिवेशिक देश उपनिवेशवाद के विरुद्ध हुए। अपने देश की एकता एवं परंपराओं के लिए एकजुटता दिखी। यहीं से राष्ट्रवाद की भावना पनपने लगी।

2. प्रथम विश्वयुद्ध ने भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में किस प्रकार योगदान दिया? **(NCERT)**

उत्तर प्रथम विश्वयुद्ध (1914) ने संपूर्ण विश्व में एक नई आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का निर्माण किया। इस युद्ध के दौरान भारत को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा; जैसे–

- रक्षा व्यय में वृद्धि हुई।
- सीमा शुल्क बढ़ाया गया और आयकर की शुरुआत की गई।
- वर्ष 1913-18 के बीच खाद्यान्न की कीमतें दोगुनी हो चुकी थीं।
- सेना में गाँव के लोगों को बलपूर्वक भर्ती किया गया।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद वर्ष 1918 से 1921 के दौरान भारतीय उद्योगों को अत्यधिक हानि हुई। देश के अत्यधिक हिस्सों में फसलें खराब व नष्ट हो गईं, खाद्य पदार्थों का भारी अभाव पैदा हो गया, जिसके कारण लोगों को भोजन की कमी होने लगी। इंफ्लुएंजा फ्लू जैसी महामारी फैल गई। इस प्रकार की कठिन परिस्थितियों में एक नए नेता मोहनदास करमचंद गाँधी जनवरी, 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आए। यह एक दमनकारी युद्ध था। इसने क्रांतिकारी आंदोलन को दबाने के स्थान पर और तीव्र कर दिया, जिससे आम जनता में भी राष्ट्रवादी भावनाएँ पनपीं।

इस प्रकार, प्रथम विश्वयुद्ध ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

3. सक्रिय राजनीति में भाग लेने से पूर्व गाँधीजी ने किन-किन स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन किए?

उत्तर सक्रिय राजनीति में भाग लेने से पहले गाँधीजी ने अपने गुरु गोपालकृष्ण गोखले के कहने पर 'भारत भ्रमण' किया। इस दौरान उन्होंने कई स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाए, जिनमें प्रमुख हैं

- **चंपारण सत्याग्रह** वर्ष 1917 में उन्होंने बिहार के चंपारण क्षेत्र का दौरा किया और वहाँ के किसानों को दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ सत्याग्रह करने के लिए प्रेरित किया।
- **गुजरात सत्याग्रह** वर्ष 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह किया, क्योंकि फसल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी के कारण किसान लगान नहीं चुका पा रहे थे।
- **अहमदाबाद सत्याग्रह** वर्ष 1918 में अहमदाबाद के सूती कपड़ा कारखानों में कार्य करने वाले मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन किया।

4. सत्याग्रह और इसके आवेदन के विचार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए गाँधीजी द्वारा किए गए कार्यों से सभी परिचित थे। सत्य और अहिंसा के आधार पर आंदोलन और विरोध का उनका तरीका सत्याग्रह के रूप में जाना जाता था। आक्रामक हुए बिना एक सत्याग्रही अहिंसा के माध्यम से युद्ध जीत सकता है। वर्ष 1916 में गाँधीजी बिहार के चंपारण में गए और किसानों को दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित किया।

वर्ष 1917 में गाँधीजी ने गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों का समर्थन किया था, जो फसल की असफलता के कारण भोजन की कमी से पीड़ित थे और सलाह दी कि जब तक उनकी छूट की माँग स्वीकार न की जाए, तब तक वे राजस्व का भुगतान न करें। वर्ष 1918 में गाँधीजी सूती कपड़ा कारखानों के श्रमिकों के बीच सत्याग्रही आंदोलन को व्यवस्थित करने के लिए अहमदाबाद गए।

5. रॉलेट एक्ट क्या था? भारतीयों ने इस एक्ट के प्रति अपनी असहमति किस प्रकार दर्शाई? **(CBSE 2016, 15, 14, 13)**

अथवा भारत के लोग रॉलेट एक्ट के विरोध में क्यों थे?

उत्तर रॉलेट एक्ट वर्ष 1919 में अंग्रेज सरकार द्वारा आरंभ किया गया एक दमनकारी एक्ट था। वर्ष 1919 में रॉलेट अधिनियम इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के माध्यम से पारित किया गया था। इस अधिनियम के अनुसार, राजनीतिक कैदियों को बिना किसी मुकदमे के दो वर्ष के लिए जेल में रखा जा सकता था। इसलिए भारत के लोग रॉलेट एक्ट के विरोध में थे। भारतीयों ने इस एक्ट के प्रति अपनी असहमति निम्न प्रकार से प्रकट की

- महात्मा गाँधी ने इस कानून के विरुद्ध अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का निर्णय लिया।
- विभिन्न शहरों में रैली का आयोजन किया गया।
- रेलवे वर्कशॉप्स में कामगार हड़ताल पर चले गए।
- अमृतसर के जलियाँवाला बाग में शांतिपूर्ण विरोध सभाएँ हुईं।

6. वर्ष 1919 में इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल द्वारा पारित रॉलेट एक्ट के विरुद्ध भारतीय लोगों की प्रतिक्रिया का उल्लेख कीजिए।

उत्तर रॉलेट एक्ट के विरुद्ध भारतीय लोगों की निम्नलिखित प्रतिक्रिया थी

- **रैलियाँ और हड़तालें** विभिन्न शहरों में रैली का आयोजन किया गया। रेलवे वर्कशॉप्स में कामगार हड़ताल पर चले गए, जिसके परिणामस्वरूप दुकानें बंद हो गईं।
- **जलियाँवाला बाग में सभा** 13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग के बंद मैदान में सरकार की नई दमन नीति का विरोध करने के लिए बहुत भीड़ इकट्ठी हुई थी।
- **संयुक्त संघर्ष** रॉलेट एक्ट का लोगों पर गहरा और अत्यधिक प्रभाव पड़ा। हिंदुओं और मुसलमानों दोनों ने एक संयुक्त संघर्ष की जरूरत समझी।
- **महात्मा गाँधी की प्रतिक्रिया** महात्मा गाँधी अन्यायपूर्ण कानून के विरुद्ध अहिंसक ढंग से नागरिक अवज्ञा आंदोलन चलाना चाहते थे, जो 6 अप्रैल को एक हड़ताल से शुरू होना था।

7. ''गाँधीजी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थ किया।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए। **(CBSE 2020)**

उत्तर रॉलेट सत्याग्रह के दौरान महात्मा गाँधी का विचार था कि हिंदुओं और मुस्लिमों को एकसाथ मिलाए बिना किसी भी आंदोलन का आयोजन नहीं किया जा सकता। ऐसा करने का एक तरीका है कि वे खिलाफत का मुद्दा उठाएँ। प्रथम विश्वयुद्ध ओटोमन तुर्की की हार के साथ समाप्त हो गया था। यह अफवाह फैल रही थी कि इस्लामिक विश्व के आध्यात्मिक नेता (खलीफा) ओटोमन सम्राट पर एक कठोर शांति संधि लगाई जाएगी। भारत के मुसलमानों ने ब्रिटेन को अपनी तुर्की नीति को बदलने के लिए मजबूर करने का फैसला किया। मुस्लिम नेता मोहम्मद अली और शौकत अली ने इस मुद्दे पर एकजुट होकर सामूहिक कार्रवाई की संभावना के बारे में महात्मा गाँधी के साथ चर्चा शुरू की।

8. असहयोग आंदोलन की कार्यपद्धति के विषय में गाँधीजी के क्या विचार थे?

उत्तर असहयोग आंदोलन की कार्यपद्धति के विषय में गाँधीजी के विचार इस प्रकार थे

- वे इसे चरणबद्ध योजना प्रक्रिया द्वारा आगे बढ़ाना चाहते थे।
- प्रथम चरण में लोगों को सरकार द्वारा प्रदान की गई पदवियों को लौटाना, सरकारी नौकरियों, सेना, पुलिस, अदालतों, विद्यार्थी परिषदों, स्कूलों व विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार सम्मिलित था।
- दूसरे चरण में यदि सरकार दमन का मार्ग अपनाती है, तो व्यापक स्तर पर सविनय अवज्ञा अभियान प्रारंभ करना सम्मिलित था। इसके लिए वर्ष 1920 में ही गाँधीजी और शौकत अली ने देशभर में जनसभाएँ और यात्राएँ आरंभ कर दीं।

9. सफलता प्राप्त करने के लिए महात्मा गाँधी ने आंदोलन के लिए कौन-सी रणनीति तैयार की?

उत्तर सफलता प्राप्त करने के लिए महात्मा गाँधी ने कुछ रणनीतियाँ तैयार कीं, जो इस प्रकार हैं

- आंदोलन, लोगों को खिताब, सम्मान और मानद पदों के आत्मसमर्पण के साथ शुरू करना पड़ा।
- सिविल सेवा, सेना, पुलिस, ब्रिटिश न्यायालयों और विधानसभाओं, स्कूल और कॉलेजों और ब्रिटिश सामान का बहिष्कार करने की योजना बनाई गई।
- देशी सामानों को बढ़ावा देने के लिए ब्रिटिश सामानों को घरेलू सामान या स्वदेशी द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना था।
- सरकार के दमन के मामले में, सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया जाएगा।

अंततः दिसंबर, 1920 में नागपुर सम्मेलन के दौरान कांग्रेस द्वारा असहयोग आंदोलन अपनाया गया। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग खिलाफत आंदोलन पूर्ण बल के साथ शुरू हुआ।

10. शहरों में असहयोग आंदोलन के धीरे-धीरे धीमा होने के किन्हीं दो कारणों का उल्लेख कीजिए। **(CBSE 2017)**

उत्तर शहरों में असहयोग आंदोलन के धीमा होने के दो मुख्य कारण निम्नलिखित हैं

(i) खादी का कपड़ा मिलों में बड़े पैमाने पर बनने वाले कपड़ों की अपेक्षा महँगा होता था। अतः गरीब लोग उसे खरीद नहीं सकते थे। इसलिए वे विदेशी कपड़ों का लंबे समय तक बहिष्कार नहीं कर सके।

(ii) ब्रिटिश संस्थानों के बहिष्कार से भी समस्या होने लगी। वैकल्पिक भारतीय संस्थानों की स्थापना की जरूरत थी, ताकि ब्रिटिश संस्थानों के स्थान पर इनका प्रयोग किया जा सके, किंतु वैकल्पिक संस्थानों की स्थापना प्रक्रिया धीमी होने के कारण विद्यार्थी एवं शिक्षक सरकारी स्कूलों में लौटने लगे।

11. असहयोग खिलाफत आंदोलन कब शुरू हुआ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर असहयोग खिलाफत आंदोलन जनवरी, 1921 में शुरू हुआ। इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने अपनी विशिष्ट आकांक्षाओं के साथ भाग लिया। यह आंदोलन शहर में मध्यम वर्ग की भागीदारी के साथ शुरू हुआ था। इस आंदोलन में छात्रों और शिक्षकों ने सरकारी नियंत्रित स्कूल छोड़ दिए और वकीलों ने

मुकदमे लड़ना बंद कर दिया। आर्थिक मोर्चे पर असहयोग आंदोलन का प्रभाव नाटकीय था। लोगों ने विदेशी कपड़े और माल को अस्वीकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन बढ़ गया। यह आंदोलन धीरे-धीरे कम होता गया। खादी का कपड़ा महँगा होने के कारण गरीबों के लिए उपयुक्त नहीं था। वे मिलों के कपड़े का ज्यादा दिनों तक विरोध नहीं कर सकते थे। ब्रिटिश संस्थानों के बहिष्कार से भी समस्या पैदा हो गई, इसलिए छात्रों और शिक्षकों को सरकारी स्कूलों में अध्ययन और नौकरी के लिए फिर से आना शुरू करना पड़ा। वकीलों ने भी सरकारी अदालतों में कार्य पुनः प्रारंभ कर दिया था।

12. असम के बागान मजदूरों की महात्मा गाँधी और स्वराज की अवधारणा के विषय में क्या राय थी? समझाइए। **(CBSE 2019)**

उत्तर असम के बागान मजदूरों की महात्मा गाँधी और स्वराज की अवधारणा के विषय में निम्न राय थी

- मजदूरों के लिए आजादी का अर्थ था कि वे उन चहार-दीवारियों से जब चाहे आ जा सकें, जिनमें उन्हें बंद करके रखा गया था।
- 1859 ई. के इंग्लैंड इमिग्रेशन एक्ट के अंतर्गत बागानों में काम करने वाले मजदूर बिना आज्ञा के बागान से बाहर नहीं जा सकते थे।
- मजदूरों के लिए आजादी का अर्थ अपने गाँव से संपर्क रखना था।
- जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना तो हजारों मजदूर अपने अधिकारियों की अवहेलना करने लगे तथा बागान छोड़कर अपने घर चल दिए।
- मजदूर यह मानने लगे थे कि अब गाँधी राज आ रहा है, इसलिए अब सभी को गाँव में जमीन मिल जाएगी।

13. फरवरी, 1922 में गाँधीजी ने 'असहयोग आंदोलन' को वापस लेने का निर्णय क्यों किया? कोई तीन कारण स्पष्ट कीजिए। **(CBSE 2017)**

उत्तर फरवरी, 1922 में गाँधीजी के 'असहयोग आंदोलन' को वापस लेने के मुख्य तीन कारण निम्नलिखित थे

(i) आंदोलन के दौरान लोगों ने विदेशी कपड़ों और माल का बहिष्कार किया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन बढ़ा, किंतु खादी का कपड़ा महँगा होने के कारण यह गरीबों के लिए उपयुक्त नहीं था। अतः वे मिलों के कपड़ों का ज्यादा समय तक विरोध नहीं कर सके।

(ii) आंदोलन हिंसक होता गया जिसमें महिलाओं और बच्चों को पीटा गया। साथ ही प्रमुख नेताओं व जनसाधारण को गिरफ्तार किया जाने लगा।

(iii) 4 फरवरी, 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित चौरी-चौरा नामक स्थान पर बाजार से गुजर रहा एक शांतिपूर्ण जुलूस पुलिस के साथ एक हिंसक टकराव में बदल गया।

14. साइमन कमीशन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर साइमन कमीशन जॉन साइमन के नेतृत्व में गठित किया गया था। साइमन कमीशन का मुख्य उद्देश्य भारत में संवैधानिक व्यवस्था के कार्य की समीक्षा करना और उसके विषय में सुझाव देना था। भारतीय नेताओं ने इस आयोग का विरोध किया, क्योंकि इसमें कोई भारतीय नहीं था। जब वर्ष 1928 में साइमन कमीशन भारत आया, तो उसका स्वागत साइमन कमीशन वापस जाओ नारे के साथ किया गया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित सभी दलों ने प्रदर्शनों में भाग लिया।

15. ''सविनय अवज्ञा आंदोलन के अंतर्गत दांडी यात्रा प्रमुख थी।'' दिए गए कथन की पुष्टि करें।

उत्तर गाँधीजी ने 12 मार्च, 1930 को 78 अनुयायियों के साथ गुजरात के तटीय शहर दांडी के लिए साबरमती आश्रम से अपनी यात्रा शुरू की। 6 अप्रैल को वह दांडी पहुँचे और उन्होंने नमक कानून का औपचारिक रूप से उल्लंघन किया। उन्होंने समुद्री पानी को उबालकर नमक बनाना शुरू किया। इस यात्रा के दौरान 240 किमी की दूरी तय की गई थी। इससे सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई। इस आंदोलन के अंतर्गत

- विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया गया। शराब की दुकानों का विरोध किया गया।
- किसानों ने राजस्व और चौकीदारी कर देने से इनकार कर दिया। गाँव के अधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया।
- कई जगहों पर वनीय लोगों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया।
- इस आंदोलन से परेशान होकर औपनिवेशिक सरकार ने कांग्रेसी नेताओं को एक-एक करके गिरफ्तार करना शुरू किया।

16. सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करने एवं उसकी पुनःस्थापना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करना** इस आंदोलन के समय सत्याग्रहियों पर हमला किया गया, महिलाओं और बच्चों को पीटा गया और करीब एक लाख लोगों को गिरफ्तार किया गया। जब प्रमुख नेता अब्दुल गफ्फार खान को वर्ष 1930 में गिरफ्तार किया गया, तो शहर में कई हिंसक घटनाओं की सूचना मिली। इस स्थिति में महात्मा गाँधी ने एक बार फिर आंदोलन को बंद करने का फैसला किया और 5 मार्च, 1931 को इरविन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

सविनय अवज्ञा आंदोलन की पुनःस्थापना दिसंबर, 1931 में गाँधीजी गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन गए, लेकिन इस सम्मेलन का कोई लाभ नहीं हुआ और वे निराश होकर भारत वापस आ गए। उन्होंने पाया कि कांग्रेस को अवैध घोषित किया गया है, अब्दुल गफ्फार खान और जवाहरलाल नेहरू दोनों जेल में थे, इसलिए महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनः शुरू किया। यह आंदोलन एक वर्ष के लिए जारी रखा गया, लेकिन वर्ष 1934 तक इस आंदोलन का प्रभाव कम हो गया था।

17. उन परिस्थितियों की व्याख्या कीजिए, जिनमें गाँधीजी ने वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेने का निर्णय लिया।

उत्तर गाँधीजी ने गाँधी-इरविन समझौते के अंतर्गत वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेने का निर्णय लिया था, इसके निम्न कारण थे

- सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर तैयार हो गई थी।
- सरकार ने दमनकारी नीति चलाई, जिसके अंतर्गत शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर आक्रमण किए गए।
- औद्योगिक मजदूरों ने अंग्रेजी शासन का प्रतीक पुलिस चौकियों, नगरपालिका भवनों, अदालतों और रेलवे स्टेशनों पर हमले शुरू कर दिए थे।

18. राष्ट्रवाद के विकास में लोकसाहित्य का क्या योगदान है?

उत्तर राष्ट्रवाद के विकास में लोकसाहित्य का योगदान इस प्रकार है

- 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण में राष्ट्रवादियों ने लोक कथाओं को लिखना प्रारंभ किया।
- रवींद्रनाथ टैगोर ने लोक-गाथा, गीत, बालगीत व मिथकों को एकत्र किया। लोक परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिए आंदोलन किया।
- मद्रास के शास्त्री ने 'द फोकलोर्स ऑफ सदर्न इंडिया' के नाम से तमिल लोक कथाओं का विशाल संकलन चार खंडों में प्रकाशित किया। उनका मानना था कि लोक कथाएँ राष्ट्रीय साहित्य होती हैं। यह लोगों के वास्तविक विचारों की सबसे विश्वसनीय अभिव्यक्ति हैं।

अतः लोकसाहित्य ने लोगों को उनके राष्ट्र की वास्तविक पहचान से अवगत कराया, जिससे उनमें आत्मगौरव की भावना जागृत हुई।

19. 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' की सीमाओं की व्याख्या कीजिए। **(CBSE 2019)**

अथवा सविनय अवज्ञा आंदोलन की सीमाओं के मुख्य बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सविनय अवज्ञा आंदोलन की कुछ सीमाएँ निम्न थीं

- सविनय अवज्ञा आंदोलन में दलितों की भागीदारी बहुत सीमित थी।
- अविश्वास और संदेह के कारण मुस्लिम राजनीतिक समूहों की भागीदारी कम थी।
- सनातनियों और हिंदू महासभा की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली थी।
- सभी वर्गों के लोगों की अपनी-अपनी आकांक्षाएँ थीं, इसलिए संघर्ष एकजुट नहीं था और प्रतिभागियों में असंतोष था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सत्याग्रह क्या था? गाँधीजी द्वारा आयोजित कुछ सत्याग्रहों का वर्णन कीजिए।

अथवा "गाँधीजी का सत्याग्रह सत्य तथा अहिंसा के विचारों का मिश्रण था।" तीन उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सत्याग्रह से तात्पर्य सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज है। यदि आपका उद्देश्य सच्चा है, आपका संघर्ष अन्याय के विरुद्ध है, तो आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। सत्याग्रह एक प्रकार से दमनकारियों के विरुद्ध जनांदोलन का एक अहिंसावादी ढंग माना जाता है। यह सत्य है कि गाँधीजी का सत्याग्रह सत्य तथा अहिंसा के विचारों का मिश्रण था। गाँधीजी द्वारा आयोजित कुछ सत्याग्रह निम्न थे

- गाँधीजी ने दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह की तकनीक का सफल प्रयोग किया।
- वर्ष 1916 में उन्होंने चंपारण के किसानों को न्याय दिलाने के लिए सत्याग्रह किया और सरकार को वर्ष 1918 में चंपारण के किसानों के कल्याण के लिए एक अधिनियम पारित करना पड़ा।
- वर्ष 1917 में उन्होंने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। फसल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी के कारण खेड़ा जिले के किसान लगान चुकाने की हालत में नहीं थे। वे चाहते थे कि लगान वसूली में ढील दी जाए। अंततः सरकार को झुकना पड़ा और लगान का भुगतान अगले वर्ष तक स्थगित कर दिया गया।
- वर्ष 1918 में गाँधीजी ने अहमदाबाद के मिल श्रमिकों की हड़ताल में हस्तक्षेप किया तथा उनके वेतन में वृद्धि करने में सहायता की, जिसके लिए उन्होंने आमरण अनशन शुरू किया था।

2. असहयोग आंदोलन किस प्रकार शहरों में शुरू हुआ? आर्थिक मोर्चे पर इसके प्रभावों की व्याख्या कीजिए। **(CBSE 2018)**

अथवा देशभर के शहरों में असहयोग आंदोलन का प्रसार किस प्रकार हुआ? आर्थिक क्षेत्र पर इसके प्रभावों का उल्लेख करें।

उत्तर असहयोग आंदोलन शहरी मध्यवर्ग की हिस्सेदारी के साथ शहरों में शुरू हुआ। इस आंदोलन में लोगों की भागीदारी का प्रसार निम्नलिखित रूपों में हुआ

- **मध्यवर्ग की भागीदारी** शहरों में यह आंदोलन मध्यवर्ग द्वारा शुरू हुआ था। हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी नियंत्रण वाले स्कूल-कॉलेज छोड़ दिए। मुख्याध्यापकों व अध्यापकों ने त्याग-पत्र दे डाले और वकीलों ने अपनी वकालत छोड़ दी।
- **गाँवों में आंदोलन** गाँवों में लोगों ने 'स्वराज' के विचार की व्याख्या अपने ढंग से की थी, परंतु उन्होंने बड़े पैमाने पर आंदोलन में भाग लिया।
- **परिषद् चुनावों का बहिष्कार** मद्रास (वर्तमान चेन्नई) के अतिरिक्त अधिकतर प्रांतों में काउंसिल के चुनावों का बहिष्कार किया गया।
- स्वदेशी असहयोग आंदोलन का भारतीय कपड़ा मिलों पर भी भारी प्रभाव पड़ा। स्वदेशी माल, विशेषतः भारतीय मिलों में बने कपड़ों को महत्त्व दिया गया था। विदेशी माल का बहिष्कार किया गया। शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई व विदेशी कपड़े की होली जलाई गई।
- **उद्योगों पर प्रभाव** बहुत स्थानों पर व्यापारियों ने विदेशी वस्तुओं का व्यापार करने या विदेशी व्यापार में पैसा लगाने से मना कर दिया। इस कारण भारतीय कपड़ा मिलों तथा हथकरघों के कपड़े की माँग बढ़ने लगी। माँग में वृद्धि से लुप्त हो रहे भारतीय कपड़ा उद्योग को भारी राहत मिली।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में असहयोग आंदोलन के फैलने के कारणों का वर्णन करें।

उत्तर ग्रामीण क्षेत्रों में असहयोग आंदोलन के फैलने के निम्नलिखित कारण थे

- **प्रतिभागी** ग्राम्य क्षेत्रों में आंदोलन का नेतृत्व किसानों, जनजातीय लोगों तथा स्थानीय नेताओं ने किया। उदाहरणतः अवध में संन्यासी बाबा रामचंद्र जो पहले फिजी में गिरमिटिया मजदूर के तौर पर काम कर चुके थे।
- **ग्रामीण लोगों की भागीदारी** ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंदोलन अंग्रेजों के विरुद्ध न होकर तालुकेदारों तथा जमींदारों के विरुद्ध था। ग्रामीण लोगों की समस्याएँ नगरीय लोगों से भिन्न थीं। तालुकेदार तथा जमींदार ऊँची लगान तथा विभिन्न प्रकार के कर दूसरों से वसूलते थे। किसानों को बेगार करनी पड़ती थी तथा जमींदार के खेतों में बिना मजदूरी काम करना पड़ता था।

- **विरोध के तरीके** ग्रामों में आंदोलन का एक दूसरा ही रुख था। कई स्थानों पर जमींदारों को नाई, धोबी और मोची की सुविधाओं से वंचित करने के लिए पंचायतों ने 'नाई-धोबी बंद' का आदेश दिया। जवाहरलाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेता अवध के गाँवों में उन लोगों की समस्याओं को समझने के लिए दौरे पर गए।

  अक्टूबर तक जवाहरलाल नेहरू, बाबा रामचंद्र तथा कुछ अन्य लोगों के नेतृत्व में 'अवध किसान सभा' का गठन कर लिया गया। जब वर्ष 1921 में आंदोलन फैला तो तालुकेदारों और व्यापारियों के मकानों पर हमले होने लगे। आंदोलन हिंसक हो उठा, जिसे कुछ कांग्रेसी नेताओं ने पसंद नहीं किया।

4. **''आदिवासी किसानों ने महात्मा गाँधी के संदेश और 'स्वराज' के विचार का कुछ और ही मतलब निकाला।'' उपयुक्त उदाहरण देकर कथन का समर्थन करें।**

अथवा **भारत के विभिन्न भागों में किसानों एवं आदिवासियों ने 'असहयोग आंदोलन' में किस प्रकार भाग लिया? व्याख्या कीजिए।** **(CBSE 2019)**

उत्तर यह कथन सत्य है कि ''आदिवासी किसानों ने महात्मा गाँधी के संदेश और स्वराज के विचार का अलग अर्थ निकाला था।'' उन्होंने सोचा था कि गाँधीजी ने यह घोषित किया है कि किसी भी कर का भुगतान नहीं किया जाएगा और गरीबों के बीच भूमि को पुनर्वितरित किया जाएगा। इस कारण आंध्र प्रदेश की गुडेम पहाड़ियों में एक आतंकवादी गुरिल्ला आंदोलन, अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में पूर्ण रूप से फैल गया।

असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर अल्लूरी सीताराम राजू ने महात्मा गाँधी की महानता की बात की तथा लोगों को 'खादी' पहनने और शराब का त्याग करने को कहा। उनका मानना था कि भारत अहिंसा से नहीं, बल्कि बल के उपयोग से मुक्त हो सकता है।

कांग्रेस इस तरह के संघर्ष को कभी स्वीकार नहीं कर सकती थी। अन्य वन क्षेत्रों की तरह यहाँ भी अंग्रेजी सरकार ने बड़े-बड़े जंगलों में लोगों के दाखिल होने पर पाबंदी लगा दी थी।

लोग इन जंगलों में न तो मवेशियों को चरा सकते थे न ही जलाने के लिए लकड़ी और फल बीन सकते थे। इससे पहाड़ों के लोग परेशान और गुस्सा थे। न केवल उनकी रोजी-रोटी पर असर पड़ रहा था, बल्कि उन्हें लगता था कि उनके परंपरागत अधिकार भी छीने जा रहे हैं। जब सरकार ने उन्हें सड़कों के निर्माण के लिए बेगार करने पर मजबूर किया तो लोगों ने बगावत कर दी।

5. **गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन कब शुरू किया? इस आंदोलन ने देश को किस प्रकार एकजुट किया? समझाइए।** **(CBSE 2019)**

अथवा **गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन क्यों शुरू किया? किन्हीं तीन कारणों का उल्लेख करें।** **(CBSE 2018)**

उत्तर गाँधीजी ने वर्ष 1930 में जब सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया तब देश में ब्रिटिश सरकार के प्रति देशवासियों में अत्यधिक रोष था। इस आंदोलन को शुरू करने के पीछे कई घटनाएँ थीं, जिन्होंने देशों को एकजुट करने में मदद की।

- **आर्थिक कारण** सबसे पहला कारण आर्थिक संकट था। वर्ष 1929 की महामंदी का भारतीय अर्थव्यवस्था, विशेषतः कृषि पर दुष्प्रभाव पड़ा। वर्ष 1926 से कृषि उत्पादों की कीमतें गिरनी शुरू हुईं, जो वर्ष 1930 तक बहुत नीचे आ गईं। कृषि उत्पादों की माँग घटने से निर्यात गिर गया और किसानों को अपनी उपज बेचकर लगान चुकाना भी कठिन हो गया। सरकार ने करों में छूट देने से मना कर दिया। अतः वर्ष 1930 में किसानों की दशा शोचनीय बन गई। आंदोलन के फलस्वरूप किसानों ने राजस्व और चौकीदारी कर देने से मना कर दिया।
- **व्यवसायी वर्ग में समर्थन** व्यवसायी वर्ग ने अपने कारोबार को फैलाने के लिए ऐसी औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया, जिनके कारण उनकी व्यावसायिक गतिविधियों में रुकावट आती थी। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन को आर्थिक समर्थन प्रदान करने का निर्णय लिया।
- **साइमन कमीशन की असफलता** राष्ट्रवादी आंदोलन को देखकर साइमन कमीशन का गठन किया गया था, परंतु यह कमीशन भारतीय लोगों तथा नेताओं को संतुष्ट करने में असफल रहा। कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित सभी पार्टियों ने प्रदर्शनों में हिस्सा लिया। इस विरोध को शांत करने के लिए वायसराय लॉर्ड इरविन ने अक्टूबर, 1929 में भारत के लिए 'डोमीनियन स्टेटस' का ऐलान कर दिया, परंतु इससे भी नेता संतुष्ट नहीं हुए।
- **पूर्ण स्वराज** दिसंबर, 1929 को जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर सम्मेलन में 'पूर्ण स्वराज' या भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की माँग को अंतिम रूप दिया गया। यह घोषित किया गया कि 26 जनवरी, 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।
- **गाँधीजी की 11 माँगें अस्वीकार** 31 जनवरी, 1930 को गाँधीजी ने भारतीयों के साथ हुए अन्याय को समाप्त करने के लिए एक वक्तव्य में 11 माँगें रखीं, जिनमें से कुछ इस तरह थीं–उन्होंने वायसराय को आश्वासन दिया कि यदि उनकी माँगें मान ली गईं, तो वे सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लेंगे, परंतु वायसराय ने उनकी इन माँगों को अवास्तविक घोषित कर दिया।

6. **'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में गरीब किसानों की भूमिका का वर्णन कीजिए।** **(CBSE 2020)**

उत्तर गाँवों में संपन्न किसान समुदाय; जैसे–गुजरात के पाटीदार और उत्तर प्रदेश के जाट सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय थे। व्यावसायिक फसलों की खेती करने के कारण व्यापार में मंदी और गिरती कीमतों से वे बहुत परेशान थे। जब उनकी नकद आय खत्म होने लगी तो उनके लिए सरकारी लगान चुकाना कठिन हो गया। सरकार लगान कम करने को तैयार नहीं थी। संपन्न किसानों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का बढ़-चढ़ कर समर्थन किया, उन्होंने अपने समुदायों को एकजुट किया और कई बार अनिच्छुक सदस्यों को बहिष्कार के लिए मजबूर किया।

उनके लिए स्वराज की लड़ाई भारी लगान के खिलाफ थी, लेकिन जब वर्ष 1931 में लगानों के घटे बिना आंदोलन वापस ले लिया गया तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। गरीब किसान केवल लगान में कमी नहीं चाहते थे। उनमें से बहुत सारे किसान जमींदारों से पट्टे पर जमीन लेकर खेती कर रहे थे।

वे चाहते थे कि उन्हें जमींदारों को जो भाड़ा चुकाना था उसे माफ कर दिया जाए। इसके लिए उन्होंने कई रेडिकल आंदोलनों में भाग लिया। इस प्रकार सविनय अवज्ञा आंदोलन में गरीब किसानों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

7. ''इतिहास और कथा, लोकगीत और गीत, लोकप्रिय प्रिंट और प्रतीक सभी ने भारत में राष्ट्रवाद के निर्माण में एक भूमिका निभाई है।'' इस कथन का समर्थन करें। **(CBSE 2017)**

उत्तर ''इतिहास और कथा, लोकगीत और गीत, लोकप्रिय प्रिंट और प्रतीक सभी ने भारत में राष्ट्रवाद के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है'', जिसे निम्न प्रकार देखा जा सकता है

- राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने पाठकों से अतीत में भारत की महान् उपलब्धि पर गर्व करने का आग्रह किया तथा ब्रिटिश शासन के लिए अपनी दयनीय स्थिति को बदलने के लिए संघर्ष करने को प्रेरित किया। बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा लिखे गए उपन्यास 'आनंद मठ' एवं इसकी भाँति लिखे गए अन्य उपन्यासों ने देश के लोगों को प्रभावित किया।
- भारतीय लोककथाओं को पुनर्जीवित करने के लिए आंदोलनों के माध्यम से राष्ट्रवाद के विचार विकसित हुए। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रवींद्रनाथ टैगोर और नटेसा शास्त्री जैसे राष्ट्रवादियों ने भारतीय लोककथाओं, लोकगीतों, गाथा गीत, नर्सरी कविताएँ एवं पौराणिक कथाएँ एकत्रित कीं। क्योंकि वे पारंपरिक संस्कृति की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करना चाहते थे, जो उपनिवेशवादियों द्वारा क्षतिग्रस्त की गई थीं। क्योंकि लोकगीत लोगों की वास्तविक सोच का सबसे विश्वसनीय रूप था।
- बीसवीं सदी में राष्ट्रवाद का विकास भारत माता की छवि से जुड़ा हुआ था। अबनींद्रनाथ टैगोर और कई अन्य कलाकारों ने भारत माता की पेंटिंग बनाई। इस माँ की भक्ति को राष्ट्रवाद के साक्ष्य के रूप में देखा गया। गाँधीजी ने स्वराज ध्वज (लाल, हरा, सफेद) को डिजाइन किया। मार्च के दौरान इस झंडे को ले जाना या पकड़कर रखना चुनौती (अवज्ञा) का प्रतीक बन गया।

केस स्टडी आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

महात्मा गाँधी जनवरी, 1915 में भारत लौटे। इससे पहले वे दक्षिण अफ्रीका में थे। उन्होंने एक नए तरह के जनांदोलन के रास्ते पर चलते हुए वहाँ की नस्लभेदी सरकार से सफलतापूर्वक लोहा लिया था। इस पद्धति को वे सत्याग्रह कहते थे। सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर जोर दिया जाता था। इसका अर्थ यह था कि अगर आपका उद्देश्य सच्चा है, यदि आपका संघर्ष अन्याय के खिलाफ है, तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। प्रतिरोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है। इसके लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झिंझोड़ना चाहिए। उत्पीड़क शत्रु को ही नहीं बल्कि सभी लोगों को हिंसा के जरिए सत्य को स्वीकार करने पर विवश करने की बजाय सच्चाई को देखने और सहज भाव से स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इस संघर्ष में अंतत: सत्य की ही जीत होती है। गाँधीजी का विश्वास था कि अहिंसा का यह धर्म सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँध सकता है। भारत आने के बाद गाँधीजी ने कई स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाया। वर्ष 1917 में उन्होंने बिहार के चंपारण का दौरा किया और दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ किसानों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया। वर्ष 1917 में उन्होंने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। फसल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी के कारण खेड़ा जिले के किसान लगान चुकाने की हालत में नहीं थे। वे चाहते थे कि लगान वसूली में ढील दी जाए। वर्ष 1918 में गाँधीजी सूती कपड़ा कारखानों के मजदूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन अहमदाबाद जा पहुँचे।

(i) गाँधीजी ने सर्वप्रथम सत्याग्रह का प्रयोग कहाँ किया था?

उत्तर गाँधीजी ने सर्वप्रथम दक्षिण अफ्रीका में नस्लभेदीय सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह का प्रयोग किया था। सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर जोर दिया जाता है, जो व्यक्ति के उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक होता है।

(ii) गाँधीजी सत्याग्रह के अंतर्गत शारीरिक बल पर क्यों विशेष ध्यान नहीं देते थे?

उत्तर गाँधीजी के अनुसार यदि आपका संघर्ष अन्याय के खिलाफ है, तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। प्रतिरोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है। इसलिए गाँधी जी सत्याग्रह के अंतर्गत शारीरिक बल पर विशेष ध्यान नहीं देते थे।

(iii) गाँधीजी ने भारत में किन स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाया?

उत्तर दक्षिण अफ्रीका से आने के पश्चात् वर्ष 1917 में गाँधीजी ने बिहार के चंपारण में दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ वहाँ के किसानों को सत्याग्रह आंदोलन के लिए प्रेरित किया। वर्ष 1917 में उन्होंने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। वर्ष 1918 में गाँधीजी सूती कपड़ा कारखानों के मजदूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन चलाने के लिए अहमदाबाद गए थे।

2. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

महात्मा गाँधी के विचारों और स्वराज की अवधारणा के बारे में मजदूरों की अपनी समझ थी। असम के बागानी मजदूरों के लिए आजादी का मतलब यह था कि वे उन चहारदीवारियों से जब चाहे आ-जा सकते हैं जिनमें उनको बंद करके रखा गया था। उनके लिए आजादी का मतलब था कि वे अपने गाँवों से संपर्क रख पाएँगे। 1859 ई. के इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट के तहत बागानों में काम करने वाले मजदूरों को बिना आज्ञा बागान से बाहर जाने की छूट नहीं होती थी और यह आज्ञा उन्हें विरले ही कभी मिलती थी। जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना तो हजारों मजदूर अपने अधिकारियों की अवहेलना करने लगे।

उन्होंने बागान छोड़ दिए और अपने घर को चल दिए। उनको लगता था कि अब गाँधी राज आ रहा है। इसलिए अब तो सभी को गाँव में जमीन मिल जाएगी। लेकिन वे अपनी मंजिल पर नहीं पहुँच पाए। रेलवे और स्टीमरों की हड़ताल के कारण वे रास्ते में ही फँसे रह गए। उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया और उनकी बुरी तरह पिटाई हुई।

इन स्थानीय आंदोलनों की अपेक्षाओं और दृष्टियों को कांग्रेस के कार्यक्रम में परिभाषित नहीं किया गया था। उन्होंने तो स्वराज शब्द का अपने-अपने हिसाब से अर्थ निकाल लिया था। उनके लिए यह

एक ऐसे युग का द्योतक था, जब सारे कष्ट और सारी मुसीबतें खत्म हो जाएँगी। फिर भी, जब आदिवासियों ने गाँधीजी के नाम का नारा लगाया और 'स्वतंत्र भारत' की हुंकार भरी तो वे एक अखिल भारतीय आंदोलन से भी भावनात्मक स्तर पर जुड़े हुए थे।

जब वे महात्मा गाँधी का नाम लेकर काम करते थे या अपने आंदोलन को कांग्रेस के आंदोलन से जोड़कर देखते थे, तो वास्तव में एक ऐसे आंदोलन का अंग बन जाते थे, जो उनके इलाके तक ही सीमित नहीं था।

(i) महात्मा गाँधी की स्वराज की अवधारणा से मजदूर क्या समझते थे?

उत्तर महात्मा गाँधी की स्वराज की अवधारणा से मजदूर व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समझते थे। उनके अनुसार स्वराज का तात्पर्य यह था कि वे जिन क्षेत्रों में काम करते थे, उन क्षेत्रों में वह बेरोक-टोक आ जा सकें तथा वे अपने गाँवों से संपर्क रख सकें।

(ii) असहयोग आंदोलन का मजदूर वर्ग पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ा?

उत्तर असहयोग आंदोलन के शुरू होते ही मजदूरों ने अपने अधिकारियों की अवहेलना करनी शुरू कर दी। मजदूर अपने कार्य स्थल को छोड़कर घर वापस चले गए, क्योंकि उन्हें लगता था कि गाँधी युग में प्रत्येक मजदूर को अपने गाँव में कृषि योग्य जमीन मिल जाएगी, हालाँकि वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाए।

(iii) गाँधीजी स्वतंत्रता आंदोलन के समय आदिवासियों से किस रूप में जुड़े हुए थे?

उत्तर गाँधीजी स्वतंत्रता आंदोलन के समय आदिवासियों से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे। आदिवासियों के बीच गाँधीजी की लोकप्रियता अधिक थी। आदिवासियों के अनुसार जब वह कोई स्वतंत्रता आंदोलन गाँधीजी के नाम से शुरू करते हैं, तो आंदोलन का क्षेत्र सीमित न होकर विस्तृत हो जाता है, जो राष्ट्रीय भावना जगाने में महत्त्वपूर्ण कार्य करता था।

3. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

स्रोत 'अ' हिंदू-मुस्लिम समुदाय के मध्य अशांति

भारत के कुछ मुस्लिम राजनीतिक संगठनों ने भी सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति कोई खास उत्साह नहीं दिखाया। असहयोग-खिलाफत आंदोलन के शांत पड़ जाने के बाद मुसलमानों का एक बहुत बड़ा तबका कांग्रेस से कटा हुआ महसूस करने लगा था। 1920 के दशक के मध्य से कांग्रेस हिंदू महासभा जैसे हिंदू धार्मिक राष्ट्रवादी संगठनों के काफी करीब दिखने लगी थी। जैसे-जैसे हिंदू-मुसलमानों के बीच संबंध खराब होते गए, दोनों समुदाय उग्र धार्मिक जुलूस निकालने लगे। इससे कई शहरों में हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक टकराव व दंगे हुए। हर दंगे के साथ दोनों समुदायों के बीच फासला बढ़ता गया।

(i) स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदू-मुस्लिम समुदाय के मध्य शांति न स्थापित होने के प्रमुख कारण क्या थे?

उत्तर स्वतंत्रता कआंदोलन में असहयोग तथा खिलाफत आंदोलन के पश्चात् हिंदू-मुस्लिम समुदाय के बीच अशांति का माहौल स्थापित हुआ। इसका प्रमुख कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हिंदू धार्मिक राष्ट्रवादी संगठनों से नजदीकी थी। इस नजदीकी से मुस्लिम समुदाय अपने आपको असुरक्षित महसूस करता था, जिसने दोनों समुदाय के मध्य अशांति स्थापित की।

स्रोत 'ब' हिंदू-मुस्लिम समुदाय के मध्य मतभेद को खत्म करने की कोशिश

मुस्लिम लीग के नेताओं में से एक, मोहम्मद अली जिन्ना का कहना था कि अगर मुसलमानों को केंद्रीय सभा में आरक्षित सीटें दी जाएँ और मुस्लिम बहुल प्रांतों (बंगाल और पंजाब) में मुसलमानों को आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व दिए जाए तो वे मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचित की माँग छोड़ने के लिए तैयार हैं। प्रतिनिधित्व के सवाल पर यह बहस-मुबाहिसा चल ही रहा था कि वर्ष 1928 में आयोजित किए गए सर्वदलीय सम्मेलन में हिंदू महासभा के एम. आर. जयकर ने इस समझौते के लिए किए जा रहे प्रयासों की खुलेआम निंदा शुरू कर दी जिससे इस मुद्दे के समाधान की सारी संभावनाएँ समाप्त हो गईं।

(ii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग किन समझौतों के माध्यम से दोनों समुदायों में शांति स्थापित करना चाहती थी?

उत्तर केंद्रीय सभा में मुस्लिम समुदायों के लिए आरक्षित सीटों का प्रबंधन कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनों समुदाय के मध्य शांति स्थापित करना चाहती थी। हालाँकि इस प्रबंधन की खुलेआम निंदा के कारण शांति स्थापित नहीं की जा सकी।

स्रोत 'स' मुस्लिम समुदाय का अलगाव

जब सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ उस समय समुदायों की बीच संदेह और अविश्वास का माहौल बना हुआ था। कांग्रेस से कटे हुए मुसलमानों का बड़ा तबका किसी संयुक्त संघर्ष के लिए तैयार नहीं था। बहुत सारे मुस्लिम नेता और बुद्धिजीवी भारत में अल्पसंख्यकों के रूप में मुसलमानों की हैसियत को लेकर चिंता जता रहे थे। उनको भय था कि हिंदू बहुसंख्या के वर्चस्व की स्थिति में अल्पसंख्यकों की संस्कृति और पहचान खो जाएगी।

(iii) राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में मुस्लिम समुदाय में अविश्वास का माहौल क्यों स्थापित हुआ?

उत्तर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में मुस्लिम समुदाय के अविश्वास का प्रमुख कारण बहुसंख्यक का राजनीति में अधिक होना था, जिसके कारण मुस्लिम बुद्धिजीवी भारत में अल्पसंख्यकों के रूप में मुसलमानों की स्थिति को लेकर चिंता जता रहे थे।

● मानचित्र आधारित प्रश्न

1. भारत के मानचित्र पर निम्न को दर्शाएँ

(i) गाँधीजी ने नील की खेती करने वाले किसानों के पक्ष में सत्याग्रह आयोजित किया। **(CBSE 2020)**

(ii) सूती मिल के मजदूरों ने इस स्थान पर सत्याग्रह किया।

(iii) सविनय अवज्ञा आंदोलन

उत्तर

2. भारत के मानचित्र पर निम्न को दर्शाइए

(i) किसान सत्याग्रह

(ii) 1920 के कांग्रेस अधिवेशन का स्थान **(CBSE 2017)**

(iii) 1927 के कांग्रेस अधिवेशन का स्थान **(CBSE 2020)**

उत्तर

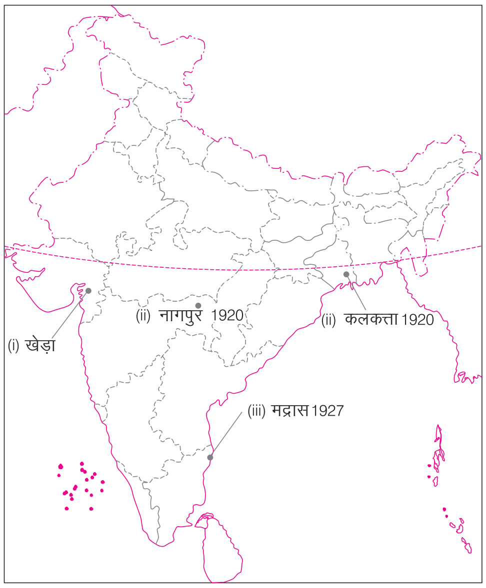

3. दिए गए मानचित्र पर अंकित 'A' व 'B' की पहचान करें

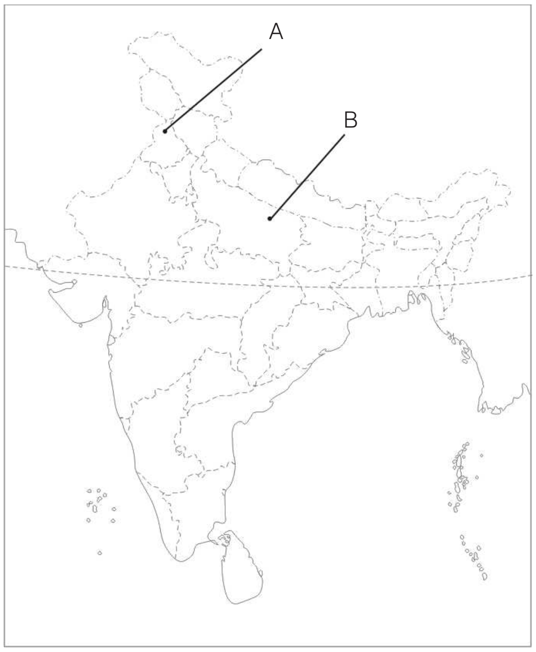

उत्तर

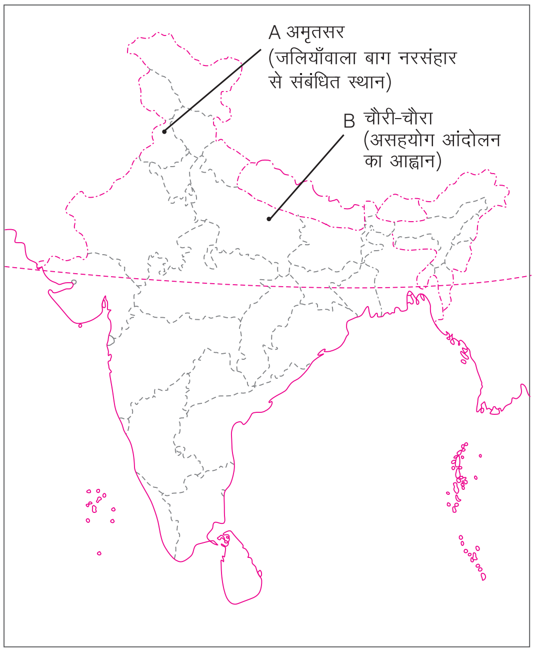

चैप्टर टेस्ट

• वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर में कुख्यात जलियाँवाला बाग हत्याकांड के लिए कौन जिम्मेदार था?
(a) वारेन हेस्टिंग्स (b) जनरल डायर (c) लॉर्ड कार्नवालिस (d) विलियम बैंटिक

2. भारत में व्यापक आंदोलन शुरू करने के लिए किसने हिंदुओं और मुसलमानों को एकसाथ लाने की आवश्यकता समझी?
(a) जवाहरलाल नेहरू (b) बाल गंगाधर तिलक (c) महात्मा गाँधी (d) लाला लाजपत राय

3. प्राय: राष्ट्र को किस रूप में प्रतीक माना जाता है?
(a) इतिहास (b) प्रतिबिंब या चित्र (c) लोकप्रिय प्रिंट (d) लोकनृत्य एवं गीत

4. निम्नांकित कथनों में से गलत कथन की पहचान कीजिए
(a) पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में किसान आंदोलन का विकास हुआ।
(b) वर्ष 1921 में खिलाफत आंदोलन की शुरुआत हुई।
(c) अंबेडकर ने वर्ष 1930 में दलितों के लिए डिप्रेस्ड क्लासेज एसोसिएशन का गठन किया था।
(d) वर्ष 1921 में गाँधीजी ने स्वराज ध्वज डिजाइन किया था।

5. सुमेलित करें

सूची I (घटना)	सूची II (वर्ष)
A. व्यक्तिगत सत्याग्रह	1. 1950
B. क्रिप्स मिशन	2. 1946
C. अंतरिम सरकार	3. 1942
D. भारत में संविधान लागू	4. 1940

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिए

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	2	1	4	(b)	4	3	2	1
(c)	2	4	1	3	(d)	3	1	2	4

• वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. गिरमिटिया मजदूर से क्या तात्पर्य है?

7. भारत में प्रथम विश्वयुद्ध ने किस प्रकार एक नई आर्थिक परिस्थिति पैदा की? तीन उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

8. भारत में लोगों द्वारा 'रॉलेट एक्ट' का किस प्रकार विरोध किया गया? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

9. सत्याग्रह का कौन-सा सिद्धांत आधुनिक दुनिया के संघर्षों को हल करने में आज भी प्रासंगिक है? दो कारण दीजिए।

10. असहयोग आंदोलन शहरों में धीरे-धीरे धीमा क्यों पड़ा? कोई तीन कारण स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

11. भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में सविनय अवज्ञा आंदोलन के महत्त्व का वर्णन कीजिए।

12. गाँधीजी की नमक यात्रा का वर्णन करें।

13. सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल विभिन्न सामाजिक समूह कौन-से थे? उन्होंने आंदोलन में क्यों हिस्सा लिया?

उत्तर **1.** (b) **2.** (c) **3.** (b) **4.** (b) **5.** (b)